प्रारम्भिक वक्तव्य

पंचम् झारखण्ड विधानसभा के तृतीय और वर्ष - 2020 के मानसून सत्र में आप सभी का हार्दिक स्वागत और अभिवादन। कुल तीन कार्य दिवस का यह महत्वपूर्ण सत्र एक ऐसे दौर में आहूत किया गया है, जब पूरी दुनिया नोवल कोरोना वायरस कोविड-19 की महामारी से गुजर रही है। दिसम्बर, 2019 में इस संक्रमण का पहला मामला जब सामने आया था तो यह कल्पना से परे था कि यह विभीषिका इतना विकराल रूप ले लेगी कि जीवन को गतिहीन कर देगी। लॉकडाउन या तालाबंदी स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा इस महामारी का मात्र एक तार्किक उपाय बताया गया और मानव सभ्यता के इतिहास में इस महामारी का प्रभाव इतना व्यापक है कि इसे "कोरोना काल" की संज्ञा दी गई और जीवन जीने के तरीके में इसके द्वारा जो परिवर्तन लाया गया है, निश्चय ही उसका प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर लम्बे समय तक दृष्टिगोचर होगा। दुनिया के करोड़ों लोग अब तक इस महामारी से संक्रमित हो चुके हैं। इसके कारण लाखों जिंदगियाँ काल के गाल में समा गयीं। लगभग छः माह का समय बीत चुका है, हमारी आर्थिक, शैक्षणिक सहित अन्य गतिविधियों को थमे हुए। दुनिया, राष्ट्र और राज्य आज बुरे दौर से गुजर रहे हैं। सकल घरेलू उत्पाद में अप्रत्याशित कमी, उपभोक्ता मूल्यों में बेतहाशा वृद्धि और बढ़ती बेरोजगारी हमारे सामने गम्भीर चुनौती और समस्या बन कर खड़ी है। पिछले छह माह से शैक्षणिक संस्थान बन्द हैं, इस शैक्षणिक वर्ष में एक भी दिन स्कूल-कॉलेज नहीं खुला यद्यपि कुछ विद्यालयों द्वारा ऑनलाईन छात्रों को पढ़ाने की व्यवस्था की गई है, परन्तु जो देश पूर्ण रूप से डिजिटल डिवाईड से ग्रसित है एवं जहाँ की विद्यालय व्यवस्था असमान है वहाँ ऑनलाईन पढाई विद्यालय का विकल्प, कदापि नहीं हो सकता है।

इस बीच कोरोना महामारी की विभीषिका के बीच पूरा मानव समाज अपने वैज्ञानिकों की ओर देख रहा है जो दिन-रात कड़ी मेहनत कर इस महामारी का टीका खोजने में लगे हैं। पूरी दुनिया के कई संस्थानों ने इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य किया है और हमें गर्व है कि हमारे देश के बहुत सारे संस्थान मानव समाज की सुरक्षा करने की इस मुहिम में पूरी तत्परता से लगे हैं। इस बीच इस महामारी से लड़ने में हमारे कोरोना योद्धा, हमारे डॉक्टर, पूरी मेडिकल स्टाफ, नर्स, प्रशासन एवं पुलिसकर्मी, सामाजिक संगठन, जो जान की परवाह किये बिना पूरी तन्मयता से लगे हैं, अपनी सेवा भावना से जिस प्रकार इन्होंने मानव जाति के जीने की प्रबल इच्छा को परिभाषित किया है, उससे मुझे हरिवंश राय बच्चन जी की पंक्तियाँ याद आ जाती हैं-

"एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती!

नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर !"

प्रलय के बाद नयी सृष्टि के निर्माण का वक्त है। हमें समवेत् होना होगा, परस्पर सहकार के साथ आगे बढ़ना होगा। हमें यह प्रयास करना होगा कि हमारे जिन नौनिहालों, जिनकी पढ़ाई बाधित हुई है, समय जब अनुकूल हो जाये तो उनके अधूरे शिक्षण कार्य की भरपाई हो सके। हमें रोज के नये अवसर तलाशने होंगे और दूसरों पर लोगों की निर्भरता को कम करने के ठोस प्रयास करने होंगे। मानव सभ्यता के इतिहास में बहुत बार विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं लेकिन मनुष्य बार-बार गिर कर फिर से खड़ा हुआ है। हमें भरोसा है आज के नेतृत्व पर और उनकी क्षमता पर। निर्माण की नयी दिशा तय करने के लिए हमारा नेतृत्व सामने आया है और हमारा भरोसा है कि सभा का सहयोग दलीय प्रतिबद्धताओं से बाहर आकर इस नेतृत्व को मिलेगा। झारखण्ड की सवा तीन करोड़ जनता की शुभ कामनायें और शुभेच्छायें जब हमारे साथ होंगी तो हम निश्चित ही कामयाब होंगे।

मेरे साथ-साथ सदन के प्रत्येक सदस्य को यह ज्ञात है कि विगत् 25 मार्च, 2020 की अर्द्ध रात्रि से देश में जब रेलगाड़ियों के पहिए थम गए थे, हवाई उड़ानों के साथ-साथ आम जनता की सड़क परिवहन प्रणाली अचानक बन्द हो गयी थी तो देश त्राहिमाम् कर उठा था। विभिन्न राज्यों से देश के औद्योगिक और बड़े शहरों में जाकर काम करने वाले लोग फँस गए थे। भविष्य की चिन्ता से ग्रस्त होकर हमारे ही समाज का बड़ा श्रमिक वर्ग किसी तरह अपने घर की ओर लौटने की चिन्ता से ग्रस्त होकर विलाप कर रहे थे तो हमारे मुख्य मंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने अपने दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए उनकी घर वापसी का कारगर प्रबन्ध किया। यह उन्हीं के सद्प्रयासों का सुपरिणाम था कि देश की पहली श्रमिक रेलगाड़ी झारखण्ड की राजधानी राँची आयी और इसके बाद ही दूसरे राज्यों में भी इनकी वापसी का रास्ता खुला। हम माननीय

मुख्य मंत्री सहित पूरी सरकार को इसके लिए धन्यवाद देते हैं कि श्रमिकों को लेकर झारखण्ड आने वाली रेलगाड़ियों की संख्या लगभग साठ रही। इसी तरह झारखण्ड देश का पहला राज्य रहा, जिसने अपने प्रवासी मजदूरों को अपने खर्च पर हवाई मार्ग से घर वापसी कराने का काम सुनिश्चित किया। इतना ही नहीं जो भी प्रवासी झारखण्ड आए, कोरेण्टाईन अवधि में उनके आवासन, भोजन और चिकित्सा के साथ-साथ उनके परिजनों की देखभाल का काम भी इस सरकार ने किया है। निःसंदेह कोरोना से निपटना एक चुनौती का काम है, लेकिन सरकार ने इस चुनौती को स्वीकार करके इसे आगे बढ़ने के अवसर के रूप में देख कर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। महामारी के इस दौर में हमारे कई माननीय विधायक भी संक्रमण की चपेट में आए। इनमें सत्ता पक्ष के भी थे और प्रतिपक्ष के भी। आज प्रायः सभी लोग स्वस्थ होकर हमारे बीच हैं, इस बात की हमें खुशी है।

कोरोना संक्रमण के आलोक में सुरक्षात्मक उपायों के तहत् सभा के इस सत्र में सदन के बाहर और भीतर जो व्यवस्था की गयी है, वह आप सभी माननीय सदस्यों के हिफाजत की दृष्टि से आवश्यक है। यद्यपि इससे आप सभी को थोड़ी असुविधा तो हो रही होगी किन्तु स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संबंधी आवश्यक मानकों के पालन के निमित्त यह आवश्यक है। आसन व्यवस्था के निर्धारण के क्रम में आवश्यक शारीरिक दूरी सदस्यों के बीच स्थापित करने का प्रयास किया गया है। अतः माननीय सदस्यों से इस क्रम में मैं अपेक्षित सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

विधानसभा के इस सत्र में सरकार वित्तीय वर्ष - 2020-21 का अपना पहला अनुपूरक बजट पेश करेगी। इसी के साथ कुछ महत्वपूर्ण विधेयकों के भी लाये जाने की सम्भावना है। माननीय सदस्यों के

बहुमूल्य सुझावों के साथ हमारा वित्तीय और विधायन संबंधी कार्य पूरा होगा, ऐसी उम्मीद मुझे है।

पिछले सत्र से अब तक की अवधि का जो बड़ा अन्तराल रहा है, उसके बीच बहुत सारी समस्याएँ सामने आई हैं। उनका समाधान प्रश्न, ध्यानाकर्षण और शून्यकाल जैसी सूचनाओं के माध्यम से हो सकेगा, मुझे यह उम्मीद भी है। यद्यपि यह सत्र छोटा है तथापि यह सार्थक और सदुपयोगी होगा, यह विश्वास मुझे है। मैं आप सबसे पूर्ण सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।